भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 24 अंक : 5 | शनिवार, 26-5-2001 | वार्षिक चंदा : 50-00

गुणातीत समाज के सृष्टा की जन्मजयंती

अहो ! 12 जून का महामंगलकारी दिन... एक ऐसे सूर्य के उदय होने का दिन–जिसने धरती पर उदित होकर अनेक मुमुक्षुओं के लिये प्रत्यक्ष की उपासना का मार्ग प्रकाशित किया... श्रीजी के अखंड धारक, श्रीजी के संदेश वाहक, श्री अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना के प्रवर्तक, ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज जिनके आने मात्र की आहट सुनकर बीमारी में भी उठ कर बैठे हो जाते, जबकि वे करवट भी नहीं ले सकते थे– उनके लाडले व योगीजी महाराज– जिनके मुँह पर हर कार्य की पहल के लिये हमेशा 'दादुभाई-दादुभाई' रहा करता था... ऐसे हमारे प्राणाधार-हम सब के चैतन्यशिल्पी प्यारे प्रभु काकाजी महाराज का प्रागट्य दिन !

प.पू. गुरुजी ने एक बार बताया था कि–जैसे वचनामृत में महाराज ने वड़वानल, बिजली, मशाल व दीपक जैसे चार प्रकार के संत बताए हैं, वैसे ही कुराने शरीफ में चार प्रकार के फकीर बताए हैं। इनमें सर्वोच्च **'मारफती फकीर'**–अर्थात् जिसके द्वारा हमें तुरंत प्रभु का मिलन हो ऐसे 'मारफती पुरुष' हमें मिले प्रभुस्वरुप–प.पू. काकाजी !

आत्यांतिकी कल्याणपीढ़ी को अखंडित चालू रखने के लिए अक्षरधाम से प.पू. काकाजी को अपने साथ ही लाए हों ऐसा ब्रह्मस्वरुप प.पू. शास्त्री महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज के कई चरित्र से स्पष्ट दर्शन होता है... जैसे कि **गुरुहरि योगीजी महाराज ने 'साक्षात्कार' के लिये प.पू. काकाजी को ही चुना।** कोटि धन्यवाद हो उस समर्थ गुरु को कि जिसने ऐसे योग्य शिष्य को पसंद करा ! कोटि धन्यवाद हो उस शिष्य को जिसने गुरु की दी पात्रता को आत्मसात् करी; इतना ही नहीं, बल्कि संबंध में आये अनेकों को बाँट कर गुरु की पसंद को सार्थक किया... अपने गुरु की शान को चार चाँद लगाए।

प.पू. काकाजी यानि–आध्यात्मिक युग परिवर्तन के क्रांतिकारी युगपुरुष ! निरपेक्ष सेवा और पराभक्ति का परमस्वरूप थे प.पू. काकाजी ! योगीबापा को प्रसन्न करने की एकमात्र भावना से ही सब में रसबस हुए। सब के हृदय में प्रगट प्रभु की मूर्ति स्थापित करने की एकमात्र प्रवृत्ति निरंतर करते रहे... किसी से किंचित अपेक्षा मात्र का विचार तक नहीं आया। **गुणातीत समाज की प्रत्येक संस्था और केन्द्रों का प्रारंभ खुद प.पू. काकाजी ने किया....उनके विकास के लिए खड़े पांव खड़े रहे। हर प्रकार से सब की परवरिश करी और फिर उसकी चाबी वहीं सौंप कर खुद वितरागी रहे-यही तो थी उनकी गुणातीत अवस्था !** शिष्यों के साथ उनके जैसे ही होकर, उनके लेवल पर आकर वर्ते; इतना ही नहीं, हर एक के स्वभाव जंचा कर उन मुक्तों की महिमा समझ कर 'सुहृदभाव' से ही उठाव लेते रहे। **मूर्ति व प्रेम लुटाते ही रहे, लुटाते ही रहे और यही तो थी उनकी सहजानंदी सहजावस्था !**

अभी पिछले दिनों 29 जनवरी–बसंतपंचमी के मंगलकारी दिन पर सभी गुणातीत स्वरुपों की सेरेछाया में जब पवई-मुंबई में 'आंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक संशोधन केन्द्र' की शिलान्यासविधि हुई, तब प.पू. साहेब ने प.पू. काकाजी की बहुमुखी प्रतिभा का दर्शन कराता अत्यंत मननीय प्रवचन किया था....प.पू. साहेब ने प.पू. काकाजी का जीवन बहुत नज़दीक से देखा है। प.पू. काकाजी के प्रति प.पू. साहेब को पूज्यभाव तो था ही, क्योंकि बापा के मुख से प.पू. काकाजी की अत्यधिक महिमा सुनी थी व स्वयं भी अत्यधिक बुद्धिशाली हैं। सो, प.पू. काकाजी के हर एक वर्तन को खूब नज़दीक से निहार कर खुद माना कि इस धरती से परे की यह कोई अलग विभूति है... 29 जनवरी को प.पू. साहेब के महिमाभरे प्रवचन के एक-एक शब्द से प.पू. काकाजी का जीवंत दर्शन हो रहा था ! सब भक्तों के दिल को प.पू. साहेब की वह वाणी भीतर तक छू गई। यहाँ तक कि **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी भी नासाज़ तबियत के कारण न बैठ पाते हुए भी प.पू. साहेब को सुनने बैठे ही रहे !** सभी मुक्त

उससे लाभान्वित हो सके इस भावना से **प.पू. साहेब के वे उद्‌गार** यहां हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं...

'...काकाजी ने इन्टरनेशनल लेवल पर काम किया। वे कहते कि मैं कोस्मोपोलिटन साधु हूँ। हमने कोस्मोपोलिटन सिटी देखी, कोस्मोपोलिटन सोसाईटी देखी, लेकिन **कोस्मोपोलिटन साधु एक ही देखा– दादुकाका !** ऐसी सिटी में अंनत प्रकार के लोग बसते हैं, ऐसी सोसाईटी में अंनत प्रकार की व्यक्ति होती हैं। काकाजी सच में कोस्मोपोलिटन साधु थे।

☆ किसी की शादी में जाना हो तो धामधूम से वे शादी एटेन्ड करते।

☆ किसी के मातम में जाना हो तो सभी को रुला भी दें।

☆ फंड इत्यादि इकट्‌ठा करना हो तो सभी को इतना अधिक ऐसा प्रभावित करें कि झोली छलक जाए।

☆ बड़ी स्पीरिच्युअल मीटिंग्स में भी यदि बात करनी हो तो काकाजी हर एक के बुद्धि के लेवल पर-भावना के लेवल पर उन्हें हल मिल जाए ऐसी अद्‌भुत बातें करते। ❁

विविधता में प्रभुता बहती–ऐसे वे कोस्मोपोलिटन साधु थे। उनके साथ हमने काम किया-उन्हें देखा।

काकाजी एक बार बारात में थे; मुझे साथ जाने का मौका मिला था। बारात ने काफी समय ले लिया। प.पू. काकाजी उबासियाँ ले रहे थे। हम सभी को हुआ कि काकाजी थक गए लगते हैं। थकान लगी हो और व्यक्ति ऊब जाए, तो उसका उबासी लेना स्वाभाविक है। सामने वाले व्यक्ति को भी पता चले कि ये अब थक चुके हैं ! सो, हमने पूछा कि– थक गए हो ? क्यों उबासी ले रहे हो ? वे बोले– आज सुबह से रात हुई, ना कथा करने को मिली, ना ही कथा सुनने को मिली–उसकी मुझे उबासी आ रही है। हम समझते थे कि शादी में बेन्ड-बाजे और ढोल जो बजते हैं, उस शोर से काकाजी ऊब गए होंगे। लेकिन **उनका एक तार प्रभु के साथ सतत् जुड़ा हुआ था।**

एक बार आणंद में हमें छात्रालय के फंड के लिए मणीभाई जीवाभाई की गाड़ी में जाना हुआ। रेल्वे क्रोसिंग आया, तो वहां सभी गाड़ियाँ खड़ी रहीं। हमारे हिन्दुस्तान की अजीबी है कि घंटों तक क्रोसिंग पर खड़े रहेंगे, लेकिन फाटक खुलने पर एक सेकण्ड भी खड़े रहने कोई तैयार नहीं होगा। नियम तोड़ कर फटाफट सभी चलने लग पड़ेंगे। यूं एक ट्रेक्टर बीच में आ गया। हमारे मणीभाई जीवाभाई बहुत गुस्से वाले–चरोतर के पटेल। सो, गाड़ी से उतर कर ड्राईवर को थप्पड़ मारने गए। काकाजी उतरे और अपनी धोती को यूं कच्छे की तरह ऊँची खोंस कर खड़े रह गए! मैंने पूछा– काकाजी ! आप क्यों उतरे? वे बोले– राजा ! मणीभाई जीवाभाई के साथ ट्रेक्टर वाला कुछ हरकत कर दे, तो हमें तो पक्ष रखना पड़े-हाथापाई करनी पड़े।

काकाजी की एक विशेषता थी-कहीं भी जाओ, ताजपुर जैसे गांव में जाओ तो बिलकुल देहाती भाषा में बोलने लग पड़ते। उन लोगों को लगे कि काकाजी हमारे साथ ही पले-बड़े हुए हैं। पंजाब के पगड़ी वाले सरदारों के साथ हों–तो हमें ऐसा ही लगे कि काकाजी सरदारजी ही हैं। मुंबई-अमदावाद-वडोदरा जैसे शहरों में या न्यूयॉर्क-लंडन जैसे शहरों में एज्यूकेटेड मास हो, तो उन लोगों को भी लगे कि सच में सुप्रामेन्टल कॉन्सियसनेस की बातें तो यहां एक ही जगह पर सुनी और सुनने जैसी है। ऐसी अद्‌भुत्ता उनमें थी। **विविधता में प्रभुता बहती थी, उसके कारण इन्टरनेशनल लेवल पर उन्होंने काम किया।**

देश-विदेश में हमारी ध्वजा जो आज लहरा रही है उसके पीछे नींव में दादुकाका ने काम किया है। उन्होंने घरों में जाकर मेहमान के रुप में कैसे रहा जाए यह सिखाया। किसी के यहां जाएं, तो उनके बच्चे संभालते-पालना झुलाते, बर्तन तक साफ करते, वेक्युम क्लीनर लेकर सफाई भी करने लग पड़ते और... सभी को होता कि मेहमान के रुप में काकाजी अच्छे हैं। फिर, कथावार्ता करके काकाजी उन्हें भजन-भक्ति करते कर देते। ऐसी अद्‌भुत्ता काकाजी ने देश-विदेश जाकर, गांव-गांव घूम कर दिखाई और **उसका परिणाम हम अभी देख रहे हैं।** सो, **हमारे गुणातीत समाज की नींव के वे सर्जक कहे जाएं...**

यदि हम देखें तो **दादुकाका ने सभी को सेटल करने का काम किया।** अभी भूकंप आया, तो कितनी सारी फोर्सिस काम करने लगी-सभी को सेटल करने के लिए ? **काकाजी ने 1966 के बाद एक ही काम किया-हम सभी को सेटल करने का ! हर एक को हर एक की रीत से इकट्‌ठे रखे और धामधूम करते कर दिये...**

दादुकाका कहते कि– **एकता में प्रभुता है।** भले ही तुम कैसे भी डिफरन्ट दिमाग के होंगे, अलग-अलग समाज के होंगे, भिन्न-भिन्न व्यक्तियाँ होंगी, लेकिन उनमें **यदि प्रभु को प्रसन्न करने की भावना होगी, तो एकता प्रगटेगी और ऐसी एकता प्रभुता प्रगटाएगी। असंभव वस्तु संभव बन जाएगी... काकाजी ने हमें खूब दिया है। हमारे लिए वे हमेशा घूमते रहे हैं।** हमारे लिए अनंत प्रकार के कष्ट उठाए-कसनी सही है। फिर भी उन्होंने हमें कभी भी कष्ट महसूस नहीं

❁

☆ बड़े-बड़े व्यापारियों–उद्योगपतियों के साथ बैठे हों, तो व्यापार की ऐसी चाबीयाँ बताएँगे कि हर एक को लगे कि व्यापार में सफल होना हो तो इनकी ही सलाह पर चलना चाहिए।

☆ राजकीय नेताओं के साथ हों, तो ऊँचे से ऊँचे राजनीतिज्ञ को भी मात कर दें ऐसी नीतिमत्ता दिखा दें और उसे महसूस करवा दें कि राजनीति तो इनसे सीखें।

☆ पढ़े-लिखे विद्वानों की सेमीनार में गए हों, तो अपने विचार-अपने तर्क इतने उन्नत ढंग से पेश करते कि अन्य शिविरार्थी दिग्मूढ़ हो जाते कि हमें शिविर में भाग लेने बुलाया है या इनसे कुछ सीखने !

☆ ताश खेलने बैठें, तो वे उसमें भी एहसास करा देते कि वे एक माहिर खिलाड़ी हैं।

होने दिया। हमारे लिए वे सदा सहते ही रहे। बापु ने कहा– देना बैंक हैं; **सभी को बांटते रहे-सभी को देते रहे।** प्रभु दिये हैं; जिसे जो जरुरत हो, उसे वो दिया है और **फिर भी वे पर के पर रहे हैं...**

...हमें प्रभु का सुख लेते करने के लिए अद्‌भुत कार्य काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी और बा ने किया है। ऐसे युग में हम आए हैं, यानि भक्तियुग में हमारा प्रवेश है... हमारे हृदय और हमारे भावों को भक्ति में परिणित करके जीतेजी भगवान के धाम के सुख, शांति और आनंद का भोक्ता बनाने के लिए हमें अद्‌भुत मौका इन्होंने दिया है...

दादुकाका ने जो हमारे लिए किया, वह ऋण अदा करने अद्‌भुत मौका मिला है। वह झेल कर आपकी प्रसन्नता के पात्र बनें... पप्पाजी, काकाजी, बा, स्वामिजी ने हमें खूब दिया है। हम सभी उनके दास हैं-सेवक हैं। तो, वे हमें ऐसे आशीर्वाद दें कि एकजुट होकर काकाजी को जो पसंद था– **'संप-सुहृदभाव और एकता'–वह रखें। उसमें सच्ची भक्ति का आनंद है, उसमें ही प्रभु का सुख है।** उस प्रकार **हम एकजुट होकर विकास करें** और हमारी भक्ति अदा करके प्रभु के सुख के भोक्ता बनें इसके लिए आशीर्वाद बरसाएं ऐसी पप्पाजी के चरणों में प्रार्थना...'

✡✡✡✡✡

ताड़देव की गतिविधियाँ

हर साल की तरह इस बार भी 'ताड़देव' में प्रभुस्वरुप प.पू. काकाजी की जयंती निमित्त एक महीने की **'जपयज्ञ अनुष्ठान शिविर'** चल रही है... बच्चों की गर्मियों की छुट्टियां जल्दी शुरु हो जाने के कारण अब की बार **7 मई** से ही जपयज्ञ की शुरुआत हुई... **प.भ. अजय व प.भ. विकास मल्कानी** ने सुबह 6.30 बजे ज्योति प्रज्जवलित करके शिविर का उद्‌घाटन किया। पू. अक्षरस्वरुपस्वामी, पू. निमित्तस्वामी, प.भ. आशिष, प.भ. पुनीत, प.भ. विशाल इत्यादि संतों व युवकों ने मिलकर नीम के पत्तों का वृक्ष, उसके नीचे मिट्टी का चबूतरा व झोपड़ी में प.पू. गुरुजी का आसन खूब भक्तिभाव से बनाया है। नीम का पेड़ आर्टिफिशियल होते हुए भी अत्यंत सजीव ही दिखाई पड़ता है। धन्यवाद-धन्यवाद संतों, युवकों के भक्तिभाव भरे हृदयों को !

सुबह ठीक 6.30 बजे 'ताड़देव' में ठाकुरजी के हॉल में करीब 150-200 हरिभक्त एक गरज व महिमा से इकट्‌ठे होते हैं। सीढ़ीयां चढ़ने की उनकी जल्दबाजी देखकर प.पू. काकाजी द्वारा कहे शब्द कि–**'उत्तरभारत में कई मुमुक्षुओं ने जन्म धरा है...'** का साकार रुप दिखाई पड़ता है। स्वयं प.पू. गुरुजी सुबह 4.30 बजे उठकर 6.00 बजे तक तो एकदम तैयार हो जाते हैं... रात को 11.30-12.00 सोकर सुबह 4.30 बजे उठ जाना–प.पू. गुरुजी का यह अनथक परिश्रम जहां एक ओर कई मुक्तों की आँखों में पानी ला देता है, वहीं दूसरी ओर हमारे चैतन्य की प्रगति के लिए किया उनका यह परिश्रम व हमें जाग्रत करने-हमारी जड़ता छुड़ाने कई कितने उदाहरण दे-देकर करी सूक्ष्म बातें हमारे प्रति की उनकी प्रीति का स्पष्ट दर्शन कराती है।

अब की बार शिविर में ब्रह्मस्वरुप **प.पू. काकाजी महाराज** की परावाणी की ऑडियो कैसेट **'सिंहगर्जना'** प.पू. गुरुजी समझा रहे हैं। आश्चर्य की बात यह है कि वो कैसेट हम सबने पहले कई बार सुनी होगी। पर, प.पू. काकाजी के कहे शब्दों का तात्पर्य प.पू. गुरुजी जिस तरह समझा रहे हैं, वैसा तो अब तक हम किसी को ख्याल ही नहीं आया था... जैसे श्रीजी महाराज के समय में जब दुबली भट्ट भक्त ने अपना पूरा सर्वस्व-13 पैसे मंदिर बनाने के लिए महाराज को दिए, तो महाराज ने तुरंत कहा कि **बस ! अब मंदिर पूरा हो गया !** तब वहाँ बैठे हुओं में से कौन इस बात का मर्म समझ पाया होगा ? पर, प.पू. गुरुजी ने बताया कि **ये तो महाराज के आशीवर्चन थे** कि भट्टजी ने सर्वस्व का याहोम करके करी इस सेवा के फलस्वरुप **उसका चैतन्य मंदिर पूरा हो गया !** अब कोई साधन करने की उसे जरुरत नहीं ! हमारे मायिक चक्षु, हमारी जड़बुद्धि भला इनकी भाषा कैसे समझ पायेगी ? जैसे अभी धून्य दौरान ही प.पू. गुरुजी ने एक बहुत अच्छा प्रसंग बताया कि विवेकानंदजी जब विदेश की यात्रा से लौटे तो मैसूर के राजा ने विवेकानंदजी का भारत वापिस आने का स्वागत रखा था... विवेकानंदजी की सवारी निकालने के लिए रथ बनवाया था। जब मैसूर के राजा स्वयं उस रथ को खींचने लगे, तो सब मना करने लगे कि आप रथ खींचोगे नहीं। पर, विवेकानंदजी ने कहा कि **इन्हें रथ खींचने मना मत करो, खींचने दो !** और मैसूर के राजा ने वो रथ खींचा... इसका गहरा रहस्य स्वयं विवेकानंदजी ने बताया कि यह रथ 'हिन्दु धर्म' का प्रतीकरूप है। सो, अगर राजा धर्म का रथ खींचेगा, तो उसके पीछे प्रजा अपने आप **धर्म के मार्ग पर चलेगी...** कितनी गहरी व अनोखी सोच !

ठीक उसी प्रकार जब आज प.पू. काकाजी की परावाणी सुनते हैं और उसके गहरे अर्थ प.पू. गुरुजी समझाते हैं, तब एहसास होता है कि प.पू. काकाजी हमें क्या अनमोल चीज बख़्शिश में देना चाहते थे ? और... हम अपने मन के दायरों में फंसे रहे ! तो, अब वो भूलें दोहराया ना करें...। दूर-सुदूर बैठे सभी हरिभक्त भी इससे लाभान्वित होकर सदा सर्वदा खूब सुखी हों–इस भावना से 'भगवत् कृपा' के अगले अंक से पहले की तरह **'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'** स्तंभ के अंतर्गत इन बातों को देते रहेंगे।

✡✡✡✡✡

स्वामिनारायण महामंत्र महिमास्तवन

ओऽऽऽ... स्वामिनारायण मंत्र है जीवंत, जपो निरंतर संत की स्मृति संग।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण-2

ओऽऽऽ... भाव-कुभाव से नाम जो लेगा, कल्याण का अधिकारी बनेगा।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण-2

ओऽऽऽ... आधि व्याधि उपाधि टाले, जीव से विषय वासना निकाले।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण-2

ओऽऽऽ... भूत पिशाच इस मंत्र से भागे, निष्ठा हो दृढ़ सद्‌बुद्धि जागे।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण-2

ओऽऽऽ... काले नाग का ज़हर उतारे, स्वामिनारायण मंत्र उच्चारे।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण-2

ओऽऽऽ... सर्वोपरि मंत्र बलशाली, विघ्नहर्ता परम हितकारी।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण-2

ओऽऽऽ... प्रकृति का परिवर्तन कर दे, प्रारब्ध से जीव निर्बंध कर दे।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण-2

ओऽऽऽ... काल, कर्म, माया से बचाए, अंत में अक्षरधाम दिलाए।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण-2

ओऽऽऽ... अंतकाल स्वामिनारायण बोले, ब्रह्ममहोल के द्वार वो खोले।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण-2

ओऽऽऽ... अष्ट प्रहर, अखंड भजे जो, ब्रह्मरुप उसका जीव करे वो।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण-2

ओऽऽऽ... नामी सहित नाम ये जपेंगे, भव-भव के सब पाप जलेंगे।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण -2

ओऽऽऽ... काकाजी धून के राजा तुम, आर्षदृष्टा प्रेरककर्ता तुम।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण -2

ओऽऽऽ... स्वामिनारायण धून सिखाई, योगी की पहचान कराई।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण -2

ओऽऽऽ... प्रगट की महिमा समझाई, प्रत्यक्ष करने की करामात बताई।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण -2

ओऽऽऽ... जपो निरंतर हर क्रिया में, स्वामिनारायण बसो हृदय में।
स्वामिनारायण जय जय स्वामिनारायण -3

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 1.6.2001 शुक्रवार – भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
प.पू. पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन, गुणातीत ज्योत स्थापना दिन

(2) दि. 2.6.2001 शनिवार – भीम एकादशी, व्रत

(3) दि. 12.6.2001 मंगलवार – प.पू. काकाजी महाराज का प्रागट्य दिन
('ताड़देव' मंदिर में सुबह 6.30 से 8.15 तक मनाएंगे)
तथा जपयज्ञ अनुष्ठान शिविर की पूर्णाहुति

(4) दि. 17.6.2001 रविवार – एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393